THE SCIENCE WORLD
A Monthly e Magazine
ISSN:2583-2212

Popular Article

July, 2023; 3(07), 1593-1594

पशुओं में थनेला रोग (मैस्टाइटिस) के कारण, लक्षण, उपचार एवं बचाव

डॉ. सांवर मल, डॉ. निलम कुमारी फरान, डॉ. कविता रोहलन
सहायक आचार्य, पशुचिकित्सा शरीर रंचना एवं परजीवविज्ञान
अरावली वेटरनरी कॉलेज, सीकर, राजस्थान
https://doi.org/10.5281/zenodo.8187086

- थनेला विभिन्न प्रकार के जीवाणु, विषाणु और कवक के कारण होने वाली विश्वव्यापी बीमारी है जो दुग्ध उत्पादन को सबसे ज्यादा हानी पहुचाती है। जो डेयरी उधोग के लिए गंभीर आर्थिक समस्या का कारण बनता है।
- इस बीमारी में संक्रमण स्तन ग्रन्थि में होता है जिसके कारण दूध में भौतिक रासायनिक और जीवाणवीय परिवर्तन होता है जैसे छिछड़े आना, खून आना, दूध का रंग परिवर्तित होना तथा स्तन ग्रन्थि में सृजन आ जाना।

कारण

यह रोग जीवाणु, विषाणु एवं कवक द्वारा होता है ये रोगकारक गंदे वातावरण, पशु के थन व अयन की त्वचा पर उपस्थित रहते है जो थनों के रास्ते से प्रवेश कर जाते है, तथा वहा पर इनकी संख्या धीरे-धीरे बढ़ती जाती है।

इसके अलावा रोगकारक निम्नालिखित कारणो से स्तन ग्रन्थि में प्रवेश कर सकते है जैसे :

- **दूध निकालने वालो के हाथों से** :- यह संचरण की आम तरीका है जिसमे थनैला से पीड़ित गाय का दूध निकालने के बाद व्यक्ति के हाथ रोगकारक से दूषित हो जाते है फिर बिना हाथ ठीक से धोए व्यक्ति स्वस्थ गाय का दूध निकालता है इसके कारण संक्रमित गाय के रोगकारक स्वस्थ गाय के धन छिद्र में प्रविष्ट हो जाते है।
- **थन को आधात या चोट लगने से :-** थन को चोट भौतिक कारणों के कारण हो सकती है इसके अलाव यह खुरपका मुहपका और काउ पॉक्स विषाणु द्वारा भी हो सकती है। कई बार दूध निकालने वाली मशीन से अत्यधिक स्ट्रिपिंग से व दूध पीते समय बछड़े के काटने से भी घाव हो सकते है।
- **इंट्रामैमलरी इन्फ्यूजन से:-** यह कवक के संचरण का सामान्य तरीक है ये आमतौर पर इन्फ्यूजन के समय कवक स्तन ग्रन्थि के अंदर भी प्रवेश कर सकते है।
- **हिमेटोजेनेसिस:-** सामान्य उदारण तपेदिक थनैला है जिसमें घावो से जीव रक्त में आते है और स्तन में स्थानीकृत हो जाते है।
- **इनहेलेशन:-** माइकोप्लाज्मा जैसे जीव इनहेलेशन के माध्यम से जानवरों में प्रवेश करते है और श्वसन तंत्र में चला जाता है फिर वे रक्त में प्रवेश करते है और परिसंचरण के माध्यम से थन में प्रवेश करते है।
    - इसके अलाव अधिक दूध देने वाली तथा क्रॉस ब्रिड (जर्सी, भ्ण्थ्) पशुओं को यह रोग अधिक होता है।
    - रोग का प्रकोप ब्यात के शुरू में अथवा अंत में अधिक होता है ज्यादातर तीसरे ब्यात में इसका अधिक प्रभाव देखने को मिलता है।

Official Website
www.thescienceworld.net
thescienceworldmagazine@gmail.com

*Published:*25.07.2023

लक्षणः

- थन व अयन में सूजन आ जाती है तथा छूने पर गर्म, लाल व कठोर महसूस होता है। कई बार पशु को बुखार हो जाती है जिससे जुगाली बंद कर देता है।
- दूध का रंग पीला व कभी-कभी लाल हो जाता है तथा साथ ही दूध की मात्रा घट जाती है।
- दूध में छिछड़े आने लग जाते है जिससे दूध निकलना बंद हो जाता है।
- थनों को छुने पर दर्द होना जिससे गाय बार-बार अपनी टांगो को पटकती है तथा दूध निकालते समय लात मारने लगती है।
- पशु के व्यवहार व दूध के स्वाद में परिवर्तन होने लगता है।

बचावः-

- गायों और खलिहानों को साफ-सूथरा रखना चाहिए और सभी मल मूत्रों का उचित निपटान करना चाहिए।
- दूध निकालने वाले व्यक्ति का हाथ अच्छी प्रकार से साफ होना चाहिए। दूध पुरे हाथ से तथा पूरा निकालना चाहिए।
- रोगी पशु का दूध अंत में निकाले तथा सफाई पर पूर्ण ध्यान दे।
- पशु को दुहने के पश्चात १५ मिनट तक जमीन पर बैठने न दे तो संक्रमण की सम्भावना कम हो जाती है। क्योंकि दूध निकालने के पश्चात दुग्ध नलिकाओं को बंद होने में लगभग १५ मिनट का समय लगता है।
- आहार के साथ विटामिन ' ई ' व सेलेनियम युक्त खनिज मिश्रण दिये जाने से थनैला रोग पर नियंत्रण किया जा सकता है।

उपचारः-

(।)**घरेलू उपचार**-

- अरण्डी का तेल कपड़े से छानकर गर्म करके पशु के थन पर धीरे-धीरे मालिश करने से थनैला रोग में आराम मिलता है।
- गुड़ एक पाव, फिटकरी ५० ग्राम, और नीबूं का रस इन तीनो को एक मिलाकर पिलाये तो रोगी पशु में सुधार होने लगता है।
- अम्बाहल्दी ३० ग्राम, फिटकरी १५ ग्राम, गाय का घी ६० ग्राम ले जिसमें हल्दी व फिटकरी को महीने पिसकर, छानकर, घी में मिलाकर रोगी पशु के थन पर लगाने से थन की सूजन में आराम मिलता है।
- बिना सूजन के दूध में खून आने की दशा में सफेद फिटकरी २५० ग्राम, अनारदाना १०० ग्राम, पपड़िया कत्था ५० ग्राम, कद्दू के छीलेबीज ५० ग्राम व ग्वारपेटा ५० ग्राम सभी को कूट पीस कपड़े से छान ले। ५०-५० ग्राम की खुराक बनाकर सुबह-शाम देने से खून आना बंद हो जाता है।
- पके केले में कपूर की २ गोली देने से भी खून आना रूक जाता है।

ठद्ध होम्योपैथिक उपचार- थनैला रोग के लिए टीटासूल कैप्सूल या फिर टीटासूल तरल का उपयोग बहुत ही कारगर और असरकारक दवाई मानी जाती है।

ब्द्ध ऐलोपैथिक उपचार

- इंजेक्शन एन्टीबायेटिक ऑक्सीटेट्रासाइक्लीन, सेप्ट्राइजोन, जेन्टामाइसिन व
- स्ट्रेप्टोमाइसिन आदि का प्रयोग अलग-अलग थनैला की स्थिति में पशुचिकित्सक की देखरेख में करना चाहिए।
- इंजेक्शन एस्कोर्बिक एसिड का प्रयोग किया जाता है।
- थनों की सूजन व दर्द को कम करने के लिए फ्लुनिक्सिन इंजेक्शन व
- आइसोफ्लुड का प्रयोग किया जाता है।
- यदि दुध के साथ खून आ रहा है तब कैल्शियम बोरोग्लूकोनेट, ट्रीनेक्जेमिक एसिड या एरगोवाइन मेलिएट इंजेक्शन
- का प्रयोग किया जाता है।
- इन्ट्रामैमिलरी इंजेक्शन जैसे मौमिसेफ, पेन्डस्ट्रीन एस-एच, मैमिटेल आदि का प्रयोग किया जाता है।
- मेस्टीलेप लोशन की मालिश करने पर सूजन व दर्द में आराम मिलता है।

Official Website
www.thescienceworld.net
thescienceworldmagazine@gmail.com
*Published:*25.07.2023